भक्तिकाल : हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग

पवन कुमारी
हिन्दी विभाग
हंस राज महिला महा विद्यालय
जालंधर

समय-सीमा

सन् – १३१८- १६४३ (1318- 1643)
विक्रमी संवत्- १३७५-१६०० (1375-1600)

भक्तिकाल की प्रमुख काव्यधाराएं

१. निर्गुण भक्तिधारा
(क) संत काव्य (ज्ञानाश्रयी शाखा)
(ख) सूफी काव्य (प्रेमाश्रयी शाखा)

- २. सगुण भक्तिधारा
  (क) रॉम काव्य
  (ख) कृष्ण काव्य

पूर्व मध्यकाल, भक्तिकाल का काव्य सत्-चित्त-आनंद का काव्य है | इस काव्य की सृजनात्मकता इतनी उदात्त है कि उसकी पहुँच देशकाल की सीमा से इतर है| मनुष्य का मन और बुद्धि ही नहीं अपितु उसकी आत्मा की क्षुधा को शामिल करने की तात्विक योग्यता भी इसमें निहित है|

- इस काल के साहित्य के शाश्वत महत्व को स्वीकारते हुए इसे नि:संकोच हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग कहा जा सकता है|

आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी भक्तिकाल के विषय में लिखते हैं –

"समूचे भारतीय इतिहास में अपने ढंग का अकेला साहित्य है, इसी का नाम भक्ति साहित्य है, यह एक नई दुनिया है |"

डॉ. श्यामसुंदर दास लिखते हैं-

“जिस युग में कबीर, जायसी तुलसी, सूर जैसे रससिद्ध कवियों और महात्माओं की दिव्य वाणी उनके अंत:करणों से निकल कर देश के कोने-कोने में फैली थी, उसे साहित्य के इतिहास में सामान्यत: भक्ति युग कहते हैं ।”

१. महान् दार्शनिकों का युग

महान् कवियों का युग

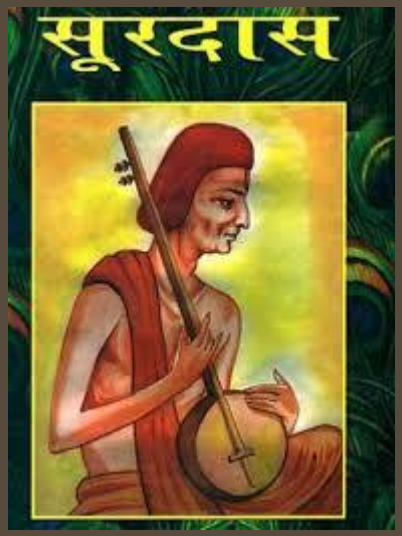

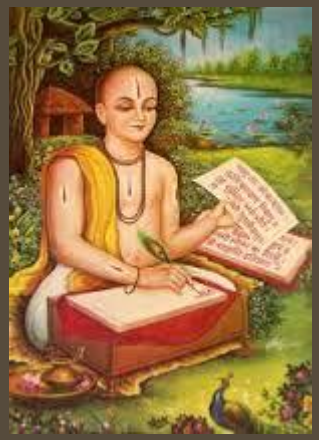

➢महान् काव्य कृतियों का युग

1. बीजक – कबीरदास
* साखी
* सबद
*रमैनी

- 2. श्रीरामचरितमानस – तुलसीदास
- महान रचना
- भारतीय जीवन का दस्तावेज़

- 3. सूरसागर
- 4. सुरसरवाली
- 5. साहित्यलहरी- सूरदास

- 6. पद्मावत – मालिक महोमद जायसी
- लौकिकता के माध्यम से आलोकिकता का काव्य

महान् मूल्यों की स्थापना

(क) आदर्श
(ख) लोकमंगल
(ग) सहज साधना
(घ) समन्वयवाद
(ङ) मानवतावाद

- (च) सत्यनिष्टता
  (छ) शील और सदाचार
  (ज) भारतीय आर्य संस्कृति का आदर्श रूप
  (झ) ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय

देशकालजयी शाश्वत महत्व के सूत्र

(क) गुरु महिमा
(ख) सत्संगति का महत्व
(ग) नाम जप का महत्व

- (घ) आंतरिक साधना पर बल
  (ङ) बाह्याडम्बरों का विरोध

काव्य का उत्कृष्ट कलापक्ष

1. जनभाषा और साहित्यक भाषा दोनों का सफल प्रयोग |
2. अवधी और ब्रज भाषा का परिमार्जित और परिष्कृत रूप का प्रयोग |

- 3. विविध काव्य रूप जैसे प्रबंध काव्य, मुक्तक काव्य, सूक्ति, संगीत, गेय पद, नाटक तथा गद्य और उपदेश इत्यादि का सफल प्रयोग |

4. विविध रस जैसे शांत रस, वीर रस, माधुर्य रस, वात्सल्य रस, करुण रस, भयानक रस का सफल प्रयोग |

- 5. विविध छंदों का प्रयोग |

  6. अलंकारों का सफल प्रयोग |

- सुंदर उदाहरणो का प्रयोग
- सुंदर शब्दावली

निष्कर्ष : नि:संदेह भक्तिकाल हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग है | भक्तिकाल एक ऐसा युग है जो देशकाल की सीमा से परे है | इस काल के साहित्य द्वारा दिए गये उपदेश युगों- युगों तक जनमानस को प्रेरित करते रहने में सक्षम है |